बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

वर्ग : स्नातक तृतीय खण्ड										पृष्ठ : 01	दिनांक : 08.09.2020
प्रतिष्ठा	✓	अनुषंगिक	X	अनुपूरक	X	रा०भा० हिन्दी	X	अहिन्दी	X	हिन्दी	पत्र : VIII
व्याख्यान का विषय : विलियम वर्ड्सवर्थ के साहित्य सम्बंधी विचारों की समीक्षा											
प्राध्यापक : - डॉ. उमेश कुमार.											

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में विलियम वर्ड्सवर्थ ने काव्य सम्बंधी सिद्धान्तों का नव-शास्त्रवाद (Neo-Classicism) से सम्बंध तोड़कर एक नयी विचारधारा का प्रवर्तन किया, जो 'स्वच्छन्दतावाद' के नाम से जाना से जाना जाता है। अपने काव्य-संग्रह 'लिरिकल बैलेड्स' के द्वितीय संस्करण की भूमिका में उन्होंने कवि, कविता तथा काव्य-भाषा के सम्बंध में अपनी मान्यताएँ स्पष्ट की है, किन्तु उनके यही विचार अन्तिम विचार नहीं कहे जा सकते हैं बल्कि इसके बाद के लेखों में अपनी इन मान्यताओं में उन्होंने पर्याप्त अन्तर किया है और उनका संशोधन-परिशोधन भी किया है।

वर्ड्सवर्थ ने प्रचलित काव्य-शैली और रूढ़-भाषा को अनुपयोगी मानकर उसका विकास व्यक्तिवाद और भावात्मकता के आधार पर किया। उन्होंने परम्परागत शैली को विकृत, विरूप, मिश्रित तथा भावहीन माना। टी. एस. इलियट की तरह वर्ड्सवर्थ ने भी सामान्य भाषा को अधिक उपादेय माना और उसी का समर्थन किया है।

वर्ड्सवर्थ से पूर्व कृत्रिम भाषा के लिए जो नियम-उपनियम बनाए गये थे, वे उनके विरुद्ध थे और विशिष्ट काव्यगत उक्तियों, मानवीकरण, वक्रोक्ति आदि के भी विरोधी थे; यहाँ तक कि वह काव्य-रचना में विपर्यय और वैषम्य के प्रति भी अरुचि ही प्रकट करते थे। अनावश्यक रूप से ठूँसी गई पौराणिक कथाएँ, भावाभास तथा दन्तकथाएँ भी उन्हें रुचिकर नहीं थीं। समग्रतः वह कृत्रिमता तथा सीमित काव्य रूपों को मान्यता देने के विरुद्ध थे।

अनेक आलोचना, समालोचना के उपरांत वर्ड्सवर्थ ने काव्य में कृत्रिमता की अपेक्षा सरल भाषा के प्रयोग पर ही विशेष बल दिया है। जहाँ दान्ते ग्राम्य भाषा से दूर रहने (Avoid rustic language) की बात लिखते हैं, वहाँ वर्ड्सवर्थ सरल और ग्रामीण जीवन से ही विषय-चयन करने का परामर्श देते हैं। उनकी दृष्टि में कवि का यह कर्तव्य है कि—

"He should keep the reader in the company of flesh and blood."

वर्ड्सवर्थ गद्य और पद्य की भाषा में विशेष अन्तर नहीं मानते। गद्य की भाषा पद्य में परिवर्तित हो सकती है — दोनों भाषाओं में भी वह अपेक्षाकृत गद्य की भाषा को ही महत्व देते हैं।

क्रमशः.